उसके पद-चिह्नों पर चलने की बुलाहट

फ्रैंकलीन के नोट्स 1 पतरस 2:21

यीशु ने इन तीन शब्दों का इस्तेमाल करके अपने शिष्यों को बुलाया : **मेरे पीछे आओ**

मत्ती 4:18-22 गलील की झील के किनारे फिरते हुए उस ने दो भाइयों अर्थात् शमौन को जो पतरस कहलाता है, और उसके भाई अन्द्रियास को झील में जाल डालते देखा; क्योंकि वे मछुवे थे। 19 यीशु ने उन से कहा, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़ने वाले बनाऊँगा।" 20 वे **तुरन्त** जालों को छोड़कर **उसके पीछे हो लिए।** 21 वहाँ से आगे बढ़कर, यीशु ने और दो भाइयों अर्थात् जब्दी के पुत्र याकूब और उसके भाई यूहन्ना को देखा। वे अपने पिता जब्दी के साथ नाव पर अपने जालों को सुधार रहे थे। **उसने उन्हें भी बुलाया।** 22 वे **तुरन्त** नाव और **अपने पिता** को छोड़कर **उसके पीछे हो लिए।**

कुछ ऐसे लोगों ने भी स्वेच्छा से पीछे आने का फैसला किया, जो बुलाए हुए नहीं थे।

मत्ती 8:19-22 तब एक शास्त्री ने पास आकर उससे कहा, "हे गुरु, **जहाँ कहीं तू जाएगा, मैं तेरे पीछे हो लूँगा।"** 20 यीशु ने उससे कहा, "लोमड़ियों के भट और आकाश के पक्षियों के बसेरे होते हैं; परन्तु मनुष्य के पुत्र के लिये सिर धरने की भी जगह नहीं है।"

- यीशु ने उसे नहीं बुलाया था, उसने स्वेच्छा से पीछे हो लेने का फैसला किया था (विवाह भोज का दृष्टान्त मत्ती 22:1-14)

किसी ने कहा "कुछ बुलाए गए थे / कुछ भेजे गए थे / कुछ बस उठे और चल पड़े।"

- हम जानते हैं कि परमेश्वर के रहमा (Rhema) वचन में रचनात्मक सामर्थ्य है, इसलिए जब यीशु ने कहा मेरे पीछे हो ले, तो उसने उन बुलाए हुओं में विश्वास को उत्पन्न किया।

- ऐसा प्रतीत होता है कि कष्ट उठाने के इस साधारण से कथन ने उसे निराश कर दिया।

21 एक और **चेले** ने उससे कहा, "हे प्रभु, मुझे पहले जाने दे कि अपने पिता को गाड़ दूँ।" 22 यीशु ने उससे कहा, "तू मेरे पीछे हो ले, और मुरदों को अपने मुरदे गाड़ने दे।"

- यह बहुत कठोर वचन है। यीशु ने हमें मत्ती 6:33 में बताया : **पहले** परमेश्वर के राज्य और उसकी धार्मिकता की खोज करो। लेकिन उसने यह भी कहा कि हम "अपने पिता और माता का आदर करें।

- तो यह क्या है?? क्या वह तुरंत जवाब चाहता है जैसे उन चारों ने दिया जिन्हें उसने सबसे पहले बुलाया था? क्या हमारी वचनबद्धता इस बात से प्रकट होती है कि हम कितनी जल्दी प्रत्युत्तर देते और आज्ञा को मानते हैं।

- मनुष्य तो बाहर का रूप देखता है, परन्तु **यहोवा की दृष्टि मन पर रहती है।** (1 शमूएल 16:7)

- परमेश्वर हमारे मन को देखता है वह जानता है कि हम वह क्यों कहते और करते हैं जो हम करते हैं। इसका एक अच्छा उदाहरण जवान धनी सरदार था :

लूका 18:21 यीशु ने उससे कहा : तू आज्ञाओं को तो जानता है . . . उसने कहा, "मैं तो इन सब को लड़कपन ही से मानता आया हूँ।" 22 यह सुन यीशु ने उससे कहा, "तुझ में अब भी एक बात की घटी है, अपना **सब कुछ बेचकर कंगालों को** बाँट दे; और तुझे **स्वर्ग में धन** मिलेगा, और आकर **मेरे पीछे हो ले।**" 23 वह यह सुनकर बहुत उदास हुआ, क्योंकि वह बड़ा धनी था।

- यह हमारे लिए बहुत कठोर वचन है कि **सब कुछ** बेचना और **पीछे हो** लेना। प्रभु बहुत स्पष्ट रूप से अपना हृदय प्रकट कर रहा था। और वह ऐसा हम में से प्रत्येक के साथ करता है।

- ऐसा लगता है कि **वह एक विश्वासी था** लेकिन उसने **अपने समर्पण पर सीमाओं को बांधना** चुना था। सब नहीं, पर हम में से अधिकतर ऐसा ही करते हैं और इस तरह बहुत कम ही ऐसे होते हैं जो उसे हर बात में सर्वप्रथम रखते हैं।

- यह इस विषय में है कि हम जिसे पसंद करेंगे, **हम जिससे सबसे ज्यादा प्रेम करेंगे**, हम उसके पीछे जाएँगे। 2 कुरिन्थियों 5:14-15 (एक हद तक) **मसीह का प्रेम हमें विवश कर देता है** (और हम विश्वास करते हैं) . . . वह इस निमित्त सब के लिये मरा (मेरे लिए भी) कि जो जीवित हैं, वे **आगे को अपने लिये न जीएँ परन्तु उसके लिये जो उनके लिये मरा और फिर जी उठा।**

- यीशु ने उससे कहा : अपना सब कुछ **बेचकर कंगालों को** बाँट दे; और तुझे **स्वर्ग में धन** मिलेगा। उसने हमें कुछ भी ऐसा करने को नहीं कहा जो उसने स्वयं नहीं किया।

- और यीशु ने यही किया। उसने उस धन के प्रति अपने प्रेम और महत्व के कारण जिसे वह स्वर्ग में पाएगा, सब कुछ दे दिया।

मैं इसका चित्रण करना चाहूँगा : परमेश्वर यहोवा ने आदम और हव्वा को अपने स्वरूप में बनाया। उसे प्रति दिन वाटिका में उनके साथ चलना और बातचीत करना पसंद था। लेकिन आदम और हव्वा ने धोखा खाया और उन्होंने सर्प की बात मानकर उस वृक्ष का फल खा लिया जिसके बारे में परमेश्वर ने कहा था भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना : क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाए उसी दिन अवश्य मर जाएगा। उत्पत्ति 2:17

अब मैं अपनी कल्पना का इस्तेमाल करना चाहूँगा :
स्वर्गदूतों ने देखा कि परमेश्वर आदम और हव्वा से कितना प्रेम रखता है। उन्होंने देखा कि परमेश्वर यहोवा प्रति दिन उनके साथ चलता और बातचीत करता है। तो जब उन्होंने देखा कि आदम और हव्वा ने बलवा किया और परमेश्वर की आज्ञा को "नहीं" कहा, तथा सर्प की बात मानकर मृत्यु को स्वीकार किया, तो मैं मानता हूँ कि स्वर्गदूतों ने कहा होगा, "ओह नहीं! अब क्या किया जा सकता है? उन्होंने बलवा किया, पाप किया और मर गए, अब क्या किया जा सकता है???

फिर उन्होंने देखा कि प्रभु यीशु मसीह अपने सिंहासन से खड़ा हुआ और उसने कहा, "पिता, मैं उन्हें तेरे लिए छुड़ा लाऊंगा।" और अब हम पढ़ते हैं

फिलिप्पियों 2:6-8 जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होकर भी (1) **परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु** न समझा। (2) वह उठ खड़ा हुआ, उसने अपना मुकुट को छोड़ा और अपने सिंहासन से **नीचे** उतर आया (3) 7 अपने आप को **ऐसा शून्य कर दिया,** उसने अपनी पदवी, अपना स्थान, और परमेश्वर होने के नाते अपनी सारी शक्तियों के अधिकार छोड़ दिए। **नीचे** की ओर बढ़ाया गया कदम, और उसने (4) **दास** का स्वरूप धारण किया, जो अपने पिता के लिए था, ताकि वह वही करे और कहे जो अपने पिता को कहते और करते हुए देखता है। 8 और मनुष्य की समानता में हो गया, मानवीय देह की सीमाओं में कैद (5) **उसने अपने आप को दीन किया** (और भी ज्यादा **नीचे**), और यहाँ तक **आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।**

- उसने उस धन के प्रति अपने प्रेम और महत्व के कारण जिसे वह स्वर्ग में पाएगा, **सब कुछ दे दिया।**

- धन -> लोग <- **जो उसके लिए इतने महत्वपूर्ण थे कि उसने अपना प्राण दे दिया।** और वह जानता था कि पृथ्वी पर का उसका सेवा कार्य और उद्देश्य अपने पिता की संतानों को छुड़ाना है।

❖ तो फिर, आप यीशु और अपने पिता की दृष्टि में कितने बहुमूल्य हो???

- **हम जिससे प्रेम रखते हैं, या जिसे पसंद करते हैं उसका मूल्य इस बात से प्रकट होता है कि हम उसे प्राप्त करने के लिए क्या कीमत देने को तैयार हैं।**

जब यीशु इस संसार में मानव के रूप में आया, तो वह समस्त मानवजाति का सेवक भी बन गया, और उसने कहा मनुष्य का पुत्र इसलिये नहीं आया कि **उसकी सेवा टहल की जाए,** परन्तु इसलिये आया कि **आप सेवा टहल करे।** मत्ती 20:28 इससे पहले कि आप कहीं जाएँ और किसी पद को ग्रहण करें, यीशु के इन वचनों को स्मरण रखो और इसी रवैये के साथ जाएँ।

1 पतरस 2:21 और **तुम इसी के लिये बुलाए भी गए हो,** क्योंकि मसीह भी **तुम्हारे लिये दुःख उठाकर तुम्हें** एक **आदर्श** दे गया है कि **तुम भी उसके पद-चिह्नों पर चलो।**

- हमें अपने आप से पूछना चाहिए . . . मैं उसके कितने पद-चिह्नों पर चल रहा हूँ?????? मैं उसके लिए कितना दुःख उठाने के लिए तैयार हूँ????

ऊपर बताया गया फिलिप्पियों का पद इन शब्दों से आरम्भ होता है : पद 5 जैसा मसीह यीशु का स्वभाव था **वैसा ही तुम्हारा भी स्वभाव हो।**

इसलिए, आइए उसके पद-चिह्नों पर चलें :

1. जिसने परमेश्वर के स्वरूप में होते हुए भी परमेश्वर के तुल्य होने को अपने वश में रखने की वस्तु न समझा। उसने अपना अधिकार त्याग दिया और अपने पिता का **अनुयायी** बन गया। उसने अपने निर्णय लेने और तर्क को अपने पिता के हाथों में सौंप दिया। हमें **उसके पद-चिह्नों पर चलना** चाहिए और जब हम परमेश्वर की ओर बुद्धि पाने और दिशा-निर्देश के लिए नहीं देखते और उससे क्या? कैसे?? कब?? कौन?? पूछने में असफल रहते हैं तो ऐसा करके हमें अपने को परमेश्वर के स्थान पर रखते हैं जो नहीं होना चाहिए।

परमेश्वर उन्हें आशीष देता है जो उसकी ज़रूरत को पहचानते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है। मत्ती 5:3 NLT का हिंदी रूपांतरण

2. उसने अपना मुकुट छोड़ दिया और अपने सिंहासन से **नीचे उतर आया।**

- हमें “अपने सिंहासन” से **नीचे उतरने** के लिए तैयार रहना चाहिए, और साथ ही अपने जीवन में अपने राज्य करने के अधिकार को **त्यागने** और उसे राज्य करने की अनुमति देने तथा **उसके पीछे चलने के लिए** तैयार रहना चाहिए। यह अपेक्षा नहीं करनी चाहिए कि वह मेरे पीछे आए, और “मेरी” योजनाओं को आशीषित करे, भले ही वह ऐसा करता है। परमेश्वर उन्हें आशीष देता है जो नम्र हैं, क्योंकि वे पृथ्वी के उत्तराधिकारी होंगे। मत्ती 5:5 NLT का हिंदी रूपांतरण

क्योंकि **मैं अपनी इच्छा नहीं** वरन् **अपने भेजने वाले की इच्छा** पूरी करने के लिये स्वर्ग से **उतरा हूँ।** यूहन्ना 6:38

जैसे तू ने मुझे जगत में भेजा, वैसे ही मैं ने भी उन्हें जगत में भेजा। यूहन्ना 17:18 अपनी इच्छा नहीं, लेकिन अपने प्रभु यीशु मसीह और अपने स्वर्गीय पिता की इच्छा पूरी करने।

3. उसने अपने आप को **शून्य कर दिया** अपने आपसे अपने आपको।
   अब हमारी सोच सबसे पहले और सर्वप्रथम “मैं” “मेरे” और “अपने” बारे में नहीं होनी चाहिए बल्कि दूसरों की ज़रूरतों के बारे में होनी चाहिए।

आज दोपहर तीन बजे, मेरी चाय पार्टी थी/ यह छोटी पार्टी थी, सिर्फ तीन मेहमान, मैं, मेरा, और मेरा अपना/ मैं सैंडविच खा गया, जबकि मेरा चाय पी गया/ वह मैं था जिसने पाई को खाया और केक अपने आपकी ओर सरका दिया। (लेखक अज्ञात)

क्योंकि जो कोई अपना प्राण **बचाना** चाहे, वह **उसे खोएगा;** और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह **उसे पाएगा।** मत्ती 16:25

4. उसने **दास** का स्वरूप धारण किया। बाइबल में सेवक यह फैसला कर सकता था कि वह अब सेवा करेगा या नहीं, लेकिन एक **दास** होने का अर्थ जीवन भर सेवा करना था। निर्गमन 21:2-6

पौलुस एक दास था (रोमियों 1:1) और वह कहता है : अब मैं क्या **मनुष्यों को मनाता हूँ** या **परमेश्वर को?** क्या मैं **मनुष्यों को प्रसन्न करना चाहता हूँ**? यदि मैं **अब तक मनुष्यों को ही प्रसन्न करता रहता तो** मसीह का **दास न होता।** गलातियों 1:10 और ऐसे ही इपफ्रास (कुलुस्सियों 1:7) तुखिकुस (कुलुस्सियों 4:7) तीमुथियुस (2 तिमु 2:24) याकूब 1:1 पतरस

(2पतरस 1:1) यहूदा (1) यूहन्ना (प्रकाशितवाक्य 1:1) मूसा (प्रकाशितवाक्य 15:3) भी थे। **हमें अपने आप से पूछना चाहिए कि मैं किसे प्रसन्न करना चाहता हूँ? परिवार? मित्र . . . अगर आपका उत्तर यीशु है तो इस सूची में अपना नाम डाल दीजिए : ________________________________.**

ध्यान दें कि उसके सभी अनुयायियों में से केवल कुछ ही **दास** हैं।

5. **उसने अपने आप को दीन किया, और यहाँ तक आज्ञाकारी रहा कि मृत्यु, हाँ, क्रूस की मृत्यु भी सह ली।**

तब यीशु ने अपने चेलों से कहा, "यदि कोई **मेरे पीछे** आना चाहे, तो **1. वह अपने आप का इन्कार करे** (परमेश्वर के प्रति समर्पित और आज्ञाकारी) और **2. अपना क्रूस उठाए,** (गलातियों 2:20 जीना) और **3. मेरे पीछे हो ले।** क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाना चाहे, वह उसे खोएगा; और जो कोई मेरे लिये अपना प्राण खोएगा, वह उसे पाएगा। मत्ती 16:24-26

प्रेम ने यीशु को सशक्त किया, और उसने उसे सब कुछ छोड़कर **दास** बनने, और यहाँ तक कि सब के लिए अपनी जान देने की **इच्छा** और **शक्ति** दी।

परमेश्वर ने जगत से ऐसा **प्रेम** रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया . . . यीशु ने इतना **प्रेम** रखा **कि वह सब के लिए दास बनकर आया... और उसने मृत्यु भी सह ली।**

आज के समय में इस प्रकार का **प्रेम** रखना और ऐसा **दास** होना दुर्लभ है तथा यह हमारे पतित स्वभाव के बिलकुल विपरीत है। परन्तु यह परमेश्वर के राज्य में जीवन का मार्ग है। यहाँ पर एक अच्छा उदाहरण है जो हम में से किसी के लिए भी हो सकता है।

याकूब और यूहन्ना की माँ ने यीशु से विनती की कि परमेश्वर के राज्य में उसके दोनों बेटे यीशु की दाहिनी और बाईं ओर बैठें। तब बाकी चेले नाराज़ हो गए और याकूब और यूहन्ना पर क्रोधित होने लगे। इस पर यीशु ने सबको परमेश्वर के राज्य का सिद्धांत बताया जिसे हम सब को जो उसके शिष्य हैं सीखना और अपने जीवन में अपनाना चाहिए।

मत्ती 20:25-28 यीशु ने उन्हें पास बुलाकर कहा, "तुम जानते हो कि अन्यजातियों के **हाकिम** उन पर **प्रभुता** करते हैं; और जो बड़े हैं, वे उन पर **अधिकार जताते हैं।** 26 परन्तु **तुम में ऐसा नहीं होगा**; परन्तु जो कोई तुम में **बड़ा** होना चाहे, वह

तुम्हारा सेवक बने; 27 और जो तुम में प्रधान होना चाहे, **वह तुम्हारा दास बने;** 28 **जैसा कि मनुष्य का पुत्र; वह इसलिये नहीं आया कि उसकी सेवा टहल की जाए, परन्तु इसलिये आया कि आप सेवा टहल करे, और बहुतों की छुड़ौती के लिये अपने प्राण दे।"**

- अपने शिष्यों में, और हमारे अंदर "मैं" "मेरा" और "अपना" का रवैया देखकर ही यीशु ने क्रूस पर चढ़ाए जाने से पहले अपनी आखिरी शिक्षा देते समय यह किया।

अंतिम भोज के समय यीशु के पास अपने शिष्यों को सिखाने के लिए एक बहुत ज़रूरी सबक था। उसने उनके पाँवों को धोया और कहा : यदि मैं ने प्रभु और गुरु होकर तुम्हारे पाँव धोए, तो तुम्हें भी एक दूसरे के पाँव धोना चाहिए। क्योंकि **मैं ने तुम्हें नमूना दिखा दिया है** कि **जैसा मैं ने तुम्हारे साथ किया है, तुम भी वैसा ही किया करो।**

यूहन्ना 13:13-15

- पैरों को धोना एक धार्मिक कृत्य नहीं बन जाना चाहिए। यह इसके मूल अभिप्राय और उद्देश्य को नष्ट कर देगी जो एक नमूने के रूप में शिक्षा थी कि उसके सब शिष्यों को सब का दास होना चाहिए और वह भी अपनी सेवा टहल किए जाने अपेक्षा किए बिना।

उसके पद-चिह्नों पर चलने के लिए, आइए हम : यीशु की ओर ताकते रहें, जिसने उस आनन्द के लिये जो उसके आगे धरा था, लज्जा की कुछ चिन्ता न करके क्रूस का दुःख सहा, इब्रानियों 12:2-3

यीशु मसीह के **सेवा** कार्य की भविष्यवाणी यशायाह 42:1 में की गई है और उसे मत्ती 12:18 में दोहराया गया है "देखो, यह **मेरा सेवक** है, जिसे मैंने चुना है; मेरा प्रिय, जिससे मेरा **मन प्रसन्न** है : मैं अपना आत्मा उस पर डालूँगा, और वह अन्यजातियों को न्याय का समाचार देगा।

- **सेवक होना परमेश्वर को भाता है।** उसने हमें चुना है, बुलाया है, और हमारे भीतर अपना आत्मा डाला है तथा हमें एक ही मिशन दिया है . . . खोए हुओं को ढूँढना और उनका उद्धार करना, तथा **सब के सेवक होने के द्वारा** यीशु का प्रेम सब लोगों पर प्रदर्शित करना।

यूहन्ना 20:21 यीशु ने फिर उनसे कहा, "तुम्हें शान्ति मिले; **जैसे पिता ने मुझे भेजा है, वैसे ही मैं भी तुम्हें भेजता हूँ।"**
सेवक बनकर।

मत्ती 23:11-12 जो तुम में **बड़ा** हो, वह तुम्हारा **सेवक** बने। जो कोई अपने आप को बड़ा बनाएगा, वह छोटा किया जाएगा: और जो कोई अपने आपको छोटा बनाएगा, वह बड़ा किया जाएगा।

मरकुस 9:35 "यदि कोई **बड़ा** होना चाहे, तो **सब से छोटा और सब का सेवक बने।"**

लूका 16:13 "कोई **दास** दो स्वामियों की सेवा नहीं कर सकता : क्योंकि वह तो एक से बैर और दूसरे से प्रेम रखेगा; या एक से मिला रहेगा और दूसरे को तुच्छ जानेगा। **तुम परमेश्वर और धन दोनों की सेवा नहीं कर सकते।"**

यूहन्ना 12:26 यदि कोई **मेरी सेवा करे, तो मेरे पीछे हो ले;** और जहाँ मैं हूँ, **वहाँ मेरा सेवक भी** होगा। यदि कोई मेरी सेवा करे, तो पिता उसका आदर करेगा।

रोमियों 16:1-2 मैं तुम से फीबे के लिये जो हमारी बहिन और किंख्रिया की कलीसिया की **सेविका** है, विनती करता हूँ
2 कि तुम, जैसा कि पवित्र लोगों को चाहिए, उसे प्रभु में ग्रहण करो; और जिस किसी बात में उसको तुम्हारी आवश्यकता हो, उसकी सहायता करो, क्योंकि **वह भी बहुतों की वरन् मेरी भी उपकार करने वाली रही है।**

मेरे पीछे चला आ

क्या तू मेरे पीछे चला आएगा गर मैं नाम तेरा पुकारूँ?
जो स्थान तू जानता नहीं क्या तू वहाँ जाएगा कि फिर पहले जैसा न रहे?
क्या तू मेरा प्रेम प्रकट करेगा, क्या तू मेरे नाम का प्रचार करेगा, क्या तू अपने भीतर मेरा जीवन बढ़ने देगा और मुझ में होगा?

क्या तू अपने स्वयं को पीछे छोड़ देगा गर मैं नाम तेरा पुकारूँ?
क्या तू निष्ठुर से प्यार करेगा और उस पर दया करेगा कि फिर पहले जैसा न रहे?
क्या तू दुश्मन के घूरने का जोखिम उठाएगा, तेरी ज्योति आकर्षित करेगी या डराएगी, क्या तू अपने भीतर प्रार्थना का उत्तर देने देगा और मुझ में होगा?

क्या तू होने देगा कि अंधे देखें गर मैं नाम तेरा पुकारूँ?

क्या तू कैदियों को रिहा करेगा कि फिर पहले जैसा न रहें?
क्या तू चूमकर कोढ़ी को शुद्ध करेगा और ऐसे काम करेगा जो पहले किए न हों,
और मेरे अर्थ को स्वीकार करेगा, जो तुझ में और तू मुझ में होगा?

क्या तू उस “अपने से” प्रेम करेगा जिसे तू छिपाता है, गर मैं नाम तेरा पुकारूँ?
क्या तू अपने भीतर के डर को बुझा देगा कि फिर पहले जैसा न रहे?
क्या तू अपने विश्वास का इस्तेमाल करके अपने चारों ओर के संसार को फिर से बनाएगा जो तुझ में मेरी दृष्टि और मेरे स्पर्श और मेरी वाणी के द्वारा हो और तू मुझ में होगा?

प्रभु तेरी पुकार की गूंज सच्ची है जब तू मेरा नाम पुकारता है। होने दे कि मैं **फिरूँ** और **तेरे पीछे आऊँ** कि फिर पहले जैसा न रहूँ। मैं तेरे साथ-साथ चलूँगा, जहाँ भी तेरा प्रेम और पद-चिह्न ले जाएँ। इस तरह मैं तुझ में वास करूँगा और तुझ में बढ़ूँगा और तू मुझ में होगा।